16x19 cm

एसआरएमएस में 16.5 घंटे चले आपरेशन के बाद न्यूरोसर्जन डा. प्रवीण त्रिपाठी ने कहा...

लगातार सिरदर्द और उल्टी को न करें नजरअंदाज

बरेली: पीलीभीत निवासी परिजन अपनी 18 वर्षीय बेटी रीमा (बदला हुआ नाम) को लेकर पिछले दिनों एसआरएमएस पहुंचे। उसे दो साल से दोनों कानों से सुनने में दिक्कत थी। तीन महीने से निगलने और बोलने में भी परेशानी होने लगी। चलने में भी समस्या होने और असंतुलन की वजह से वह बिस्तर से उठने में भी असमर्थ थी। न्यूरोसर्जन डा. प्रवीण त्रिपाठी ने उसे देखा, जांच में उसके ब्रेन में 6.5 सेमी का वेस्टिबुलर श्वानोमा ट्यूमर मिला। गंभीर स्थिति की जानकारी देकर उन्होंने तुरंत आपरेशन की सलाह दी। अगले दिन आपरेशन हुआ। 16.5 घंटे की मेहनत के बाद दिमाग से पूरी तरह ट्यूमर निकालने में सफल डा.त्रिपाठी ने कहा कि लगातार सिरदर्द और उल्टी की शिकायतों को नजरअंदाज न करें। यह ब्रेन ट्यूमर के संकेत हो सकते हैं। जो जिंदगी के लिए खतरा बन सकता है।

एसआरएमएस मेडिकल कालेज में असिस्टेंट प्रोफेसर न्यूरोसर्जन डा. प्रवीण त्रिपाठी कहते हैं कि वेस्टिबुलर श्वानोमा ट्यूमर ज्यादातर आनुवंशिक मल्टिपल ट्यूमर्स होते हैं। सुनने की नस पर ही बनते हैं। हालांकि दूसरी वजहों से भी दिमाग में ट्यूमर होने की आशंका बनी रहती है। इसके बनने की संभावना 15 से 25 वर्ष की उम्र तक ज्यादा होती है। महिलाएं इससे ज्यादा प्रभावित होती हैं। जींस की गड़बड़ी और सुनने की नस पर होने की वजह से इससे सिरदर्द, उल्टी की शिकायत आम है। गंभीर स्थिति होने पर बोलने में भी परेशानी हो जाती है। ऐसे में नाक से आवाज निकलती है। खाने में भी दिक्कत होती है और हाथ पांव भी अशक्त हो जाते हैं। पीलीभीत की इस किशोरी में भी यही सब लक्षण थे। जांच में उसके ब्रेन में 6.5 सेमी का ट्यूमर मिला। पहली बार इतना बड़ा वेस्टिबुलर श्वानोमा ट्यूमर रिपोर्ट हुआ है। हालांकि तीन, सवा तीन सेमी तक के ट्यूमर आम बात है। इतने बड़े ट्यूमर को देख कर पता था कि इसे आपरेट करने में कम से कम बारह घंटे लगेंगे। लेकिन बड़ा ट्यूमर होने की वजह से इसमें 16.5 घंटे का समय लगा। बिना किसी नर्व को छेड़े ट्यूमर निकालने में सफलता मिली। एक दिन मरीज को आईसीयू में रखा गया। दिमाग से पानी निकालने के लिए चार दिन बाद फिर एक छोटा सा आपरेशन किया। इसके तीन दिन बाद मरीज को घर जाने की अनुमति दे दी। डा.त्रिपाठी के अनुसार समय ज्यादा लगने और बड़े रिस्क की वजह से ज्यादातर लोग ऐसे आपरेशन नहीं करते। लेकिन हमने आपरेशन का फैसला किया। मरीज के पिता मजदूरी करते हैं। परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति आपरेशन की पहली वजह थी। दूसरी वजह थी- पीलीभीत से उसे एसआरएमएस मेडिकल कालेज के नाम पर रेफर किया जाना। जो हम पर विश्वास जताता है। मरीजों और डाक्टरों का यही विश्वास हमारी टीआरपी है। रेफर होकर मरीज जून में अंतिम सप्ताह में हमारे पास आया। अगले ही महीने हमने आपरेशन किया। किसी अन्य हायर सेंटर पर इस आपरेशन पर ढाई से तीन लाख रुपये खर्च आता। दिल्ली में तो यह सात लाख तक पहुंच जाता। लेकिन एसआरएमएस में यह आपरेशन प्रधानमंत्री आयुष्मान योजना में नि:शुल्क किया जा सका। अब मरीज पूरी तरह स्वस्थ है। बिना किसी परेशानी के भोजन कर रही है। चलने और बोलने में भी सक्षम है। अभी तक ऐसे आधा दर्जन से ज्यादा आपरेशन कर चुके डा.प्रवीण लोगों को कुछ सावधानी बरतने की सलाह भी देते हैं जिससे इतना बड़ा होने से पहले ब्रेन ट्यूमर का इलाज हो सके।

आपरेशन के बाद बच्ची के साथ डॉ. प्रवीण व उनकी टीम

- ब्रेन ट्यूमर से बोलने व खाने में भी दिक्कत की आशंका
- पहली बार रिपोर्ट हुआ 6.5 सेमी बड़ा वेस्टिबुलर
- श्वानोमा ट्यूमर का आयुष्मान योजना में हुआ पीलीभीत की किशोरी का आपरेशन
- अब मरीज पूरी तरह स्वस्थ

ये शिकायतें हो तो तुरंत करें विशेषज्ञ डॉक्टर से सम्पर्क

● लगातार सिरदर्द और उल्टी की शिकायत ● उल्टी के बाद सिरदर्द से आराम मिलना ● एक कान की कम होती श्रवणशक्ति याददाश्त का लगातार कम होता जाना बोलने व भोजन करने में परेशानी संतुलन न बन पाने से चलने में दिक्कत ● सिलाई, बुनाई, कढ़ाई जैसे महीन कामों में दिक्कत

SRMS Goodlife
A MULTI SPECIALITY HOSPITAL
स्टेडियम रोड, बरेली

डा. शशांक साह
एम.सी.एच. (न्यूरो सर्जन)

डा. प्रवीण कुमार त्रिपाठी
एम.सी.एच. (न्यूरो सर्जन)

डा. शरत जौहरी
डी.एम. (न्यूरोलॉजी)

डा. दिव्यंत रावल
डी.एम. (न्यूरोलॉजी)

डा. सुनील कुमार
डी.एम. (न्यूरोलॉजी)

SRMS
श्री राम मूर्ति स्मारक इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, बरेली
9458704444, 2002